7

''सात का सत्तर गुना''

(मत्ती 18:21-35)

1818 में एक दक्षिणी टापू हुआहीन का टामाटो नामक राजा मसीही बन गया। उसे कुछ देर बाद अपने द्वीप के लोगों की चाल का पता चला, जिसमें राजा और अन्य लोगों, जिन्होंने मसीहियत को अपना लिया था, को पकड़कर मौत के घाट उतारने की तैयारी की थी।

टामाटो ने एक योजना बनाकर किसी तरह के रक्तपात से बचने के लिए उन लोगों को जिन्होंने षड्यंत्र रचा था, गिरफ्तार कर लिया। फिर उसने उनके लिए अपनी शाही मेज़ पर भोज का आयोजन किया। यह उसकी ओर से दी गई क्षमा का प्रतीक था, जो उसे मसीह की ओर से मिली थी।

टामाटो के इस अनापेक्षित व्यवहार से द्वीप के लोग आश्चर्यचकित हुए और वे सब अपनी मूर्तियों को जला कर मसीही बन गए। क्षमा में इतनी शक्ति है।[1]

क्षमा में बहुत सामर्थ है। क्षमा करने वाला मन होना अपने लोगों के लिए निश्चित किए गए यीशु के कार्यक्रम का एक प्रमुख भाग है। यह बात उस निर्दयी सेवक के दृष्टांत से स्पष्ट है, जिसका उल्लेख मत्ती 18 में मिलता है।

क्षमा की शिक्षा दी गई
(मत्ती 18:21, 22)

एक अवसर पर पतरस ने यीशु के पास आकर उससे कहा, ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक?'' (आयत 21)। हम पक्का नहीं जानते कि पतरस ने सात बार का इस्तेमाल क्यों किया। रब्बी लोग यह सिखाते थे कि तीन बार क्षमा किया जाना चाहिए।[2] हो सकता है कि पतरस उनकी गिनती में सुधार कर रहा हो। हो सकता है कि पतरस ने सात का अंक इसलिए इस्तेमाल किया कि आम तौर पर इसका इस्तेमाल पूर्णता को दर्शाने के लिए किया जाता था। शायद पतरस को याद था कि एक बार यीशु ने क्षमा की शिक्षा देते हुए सात के अंक का इस्तेमाल किया था: ''यदि दिन भर में वह सात बार तेरा अपराध करे और सातों बार तेरे-पास फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूं, तो उसे क्षमा कर'' (लूका 17:4)।

यीशु ने उससे कहा, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक, वरन् सात बार के सत्तर गुने तक'' (आयत 22) या यूं कहें कि 490 बार क्षमा कर![3] यीशु ने क्षमा पर दो विशेष सबक सिखाने के लिए अतिरिक्त अंकों का इस्तेमाल किया था कि पहले हमें क्षमा करने की आदत डालनी चाहिए। 490 बार क्षमा करके तो हमें इसका आदी हो जाना चाहिए। दूसरा यह याद रखना कि हमें किसने दुख पहुंचाया है और कितनी बार हमने उसे क्षमा किया है, बहुत ही बेतुका है। एक डायरी रख कर कहना कि ''पंद्रहवीं बार क्षमा कर चुका हूं। अब और 475 बार ही क्षमा करना रह

गया है। उसके बाद क्षमा नहीं करूंगा!'' कितना हास्यास्पद है। प्रेम ''गलतियों का हिसाब नहीं रखता'' (1 कुरिन्थियों 13:5; NIV)।

यीशु ने पतरस को कोई अलग शिक्षा नहीं दी थी। क्षमा उसकी कलीसिया के लिए उसकी योजना का एक मुख्य भाग है। उसने अपने चेलों को निर्देश दिया:

> यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा (मत्ती 6:14, 15)।

> दोष मत लगाओ, तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा। दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे। क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा (लूका 6:37)।

क्षमा का नमूना दिखाया गया (मत्ती 18:23-35)

पतरस को ''सात का सत्तर गुणा'' क्षमा करने के लिए कहने के बाद यीशु ने एक दृष्टांत बताकर अपनी शिक्षा पर ज़ोर दिया। यह दृष्टांत निर्दयी सेवक का था।

> इसलिए स्वर्ग का राज्य, उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके सामने लाया गया जो दस हज़ार तोड़े का कर्जदार था (मत्ती 18:23, 24)।

इस दृश्य की कल्पना करें: राजा लम्बा सफर करने के बाद लौटा होगा और उसने अपने सेवकों और दासों को बुलाया। एक-एक करके उन सब ने उसके सिंहासन के सामने आ कर अपने भण्डारीपन का हिसाब दिया। अन्त में राजा के सामने एक दास खड़ा था, जो राजा का भरोसेमन्द था क्योंकि राजा ने उसे काफी धन सौंप रखा था। पहले तो वह दास मुस्कुराते हुए खड़ा था, परन्तु भण्डारीपन का हिसाब-किताब होने पर पता चला कि उस व्यक्ति ने राजा के दस हज़ार तोड़ों का गबन किया है, उसका रंग फीका पड़ गया।

''दस हज़ार तोड़ों'' की सही-सही कीमत बता पाना सम्भव नहीं है। एक ''तोड़ा'' एक सिक्का नहीं था, बल्कि कीमती धातु का निश्चित तौल था। क्योंकि भार का तौल हर क्षेत्र में भिन्न होता है (धातु की कीमत के अनुसार), इसलिए अधिकारी दस हज़ार तोड़ों की कीमत भिन्न-भिन्न बताते हैं।[4] इतना कहना ही काफी है कि यह एक बड़ी राशि थी। समझाने के लिए हम एक 1,00,00,000 डॉलर मान लेते हैं, जो शायद उसके बाजार मूल्य से कहीं कम हो।[5] इन छोटे-छोटे विवरणों में न उलझें (जैसे किसी दास के सिर पर इतना कर्ज कैसे को सकता है); यीशु के कहने का अर्थ था कि इस मनुष्य का कर्ज इतना था कि उसके लिए इसे वापस करना *असम्भव* था।

आयत 25 कहती है कि दस हज़ार तोड़े लौटाने के लिए उसके पास ''कुछ नहीं'' था। शायद उसने दस हज़ार तोड़े जुए में या किसी और गलत काम में लगाकर गंवा दिए थे। जो भी हो, ये तोड़े अब उसके पास नहीं थे और उन्हें लौटाने का उसके पास कोई साधन भी नहीं था। राजा ने स्थिति को समझते हुए आज्ञा दी कि ''उसको और उसकी पत्नी और लड़के-बाले और जो कुछ इसका है, सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए'' (आयत 25ख)। लोग ऐसे ही करते थे।

क्योंकि उसके कर्ज की वसूली नहीं हो सकती थी, इसका अर्थ यह था कि उस दास और उसके परिवार को आजीवन दण्ड भुगतना पड़ना था।

जब राजा ने दण्ड सुनाया तो उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया, और कहने लगा, ''हे स्वामी धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा'' (आयत 26)। उसकी यह बात बेतुकी थी, क्योंकि अपने स्वामी का धन लौटाने के लिए उसके पास कोई साधन नहीं था, परन्तु यह आदमी कुछ भी करने को तैयार था!

यीशु ने क्षमा का सुन्दर उदाहरण दिया, ''तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और उसका ऋण क्षमा किया'' (आयत 27)।

यीशु ने अपनी कहानी को खत्म नहीं किया था। ''जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उस के सौ दीनार का ऋणी था'' (आयत 28)। जिस दास के 1,00,00,000 डॉलर क्षमा हो जाएं, वह अत्याधिक प्रसन्न होगा! कोई पैसा पास न होने के कारण उसने उस साथी दास के पास जाने का निर्णय किया, जिसने उसके एक सौ दीनार देने थे।

दीनार की कीमत उस समय के साधारण मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी मानी जाती थी। इसलिए हम यहां भी नहीं कह सकते कि एक सौ दीनार की कीमत कितनी रही होगी। उस ज़माने में मज़दूर भुखमरी से बचने के लिए काम करते थे: मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए ''न्यूनतम वेतन'' का कोई कानून नहीं था। समझने के उद्देश्य से हम राशि को 18 डॉलर (लगभग 900 रुपए) मान लेते हैं। सही-सही राशि की जानकारी होना महत्वपूर्ण नहीं है। कहने का अर्थ यह है कि पहले आदमी को क्षमा किए गए धन की तुलना में यह बहुत कम थी।

जिसके 1,00,00,000 डॉलर क्षमा हुए थे, उसने अपने साथी दास को ढूंढ़ लिया। ''उस ने उसे पकड़ कर उस का गला घोंटा, और कहा, जो कुछ तेरे ऊपर ऋण है भर दे'' (आयत 28)। मैं उसे गले से पकड़ कर चिल्लाते हुए सुन सकता हूं, ''निकाल मेरे 18 डॉलर।''

तुरन्त, ''उसका साथी उसके पांव में गिर पड़ा [जैसे पहले वह राजा के पांव पर गिर गया था] और गिड़गिड़ाते हुए कहने लगा, 'धीरज धर, मैं सब भर दूंगा' '' (आयत 29)। राजा के सामने पहले दास ने यही शब्द कहे थे। दिमाग में इन शब्दों के टकराते ही उसका विवेक जाग जाना चाहिए था, परन्तु वह नहीं जागा। उसका 1,00,00,000 डॉलर का कर्ज़ क्षमा कर दिया गया था, परन्तु स्वयं वह किसी के 18 डॉलर क्षमा नहीं कर सका! उसे बहुत क्रोध आया कि उसे 18 डॉलर नहीं मिले। उसके मन में कोई क्षमा किए जाने की भावना नहीं जागी!

क्रोध में ''उसने न माना, परन्तु जाकर उसे [उस आदमी को] बन्दीगृह में डाल दिया कि जब तक कर्ज भर न दे, तब तक वहीं रहे'' (आयत 30)।[6] बन्दीगृह में रहकर वह आदमी कमा नहीं सकता था, इसका अर्थ यह हुआ कि उस निर्दयी सेवक ने उसे कुछ डॉलरों के लिए जीवन भर के लिए जेल में डाल दिया।

उसके ये काम दूसरे दासों ने देखे। ''उसके संगी दास यह जो हुआ था देख कर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया'' (आयत 31)। राजा को बड़ा क्रोध आया।

> तब उसके स्वामी ने उसको बुला कर उससे कहा, हे दुष्ट दास, तूने मुझसे विनती की, तो मैंने तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा कर दिया। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी

> अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी? और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया कि जब तक वह सब कर्ज़ भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे (आयतें 32-34)।

नि:संदेह इस मनुष्य ने फिर अपने स्वामी की मिन्नत की, पर इस बार उसकी बात न बनी। उसकी बातों से यह संकेत मिलता था कि वह न्याय चाहता है, और राजा ने उसे न्याय दे दिया! कर्ज़दारों को कई बार सताने वालों के हवाले कर दिया जाता था,[7] जो उनसे यह उगलवाने के लिए कि पैसे कहां से मिल सकते हैं या उन्होंने कहां छिपाए हैं, बड़ा कष्ट देते और अत्याचार करते। उस आदमी के पास पैसे लाने का कोई साधन नहीं था; इसका अर्थ यह है कि उसे जीवन भर सताया जाना था, जो सम्भवतया अनन्त दण्ड का संकेत ही है।

यीशु ने इन गम्भीर शब्दों के साथ अपनी बात पूरी की: ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा'' (आयत 35)। क्षमा पाना या उस क्षमा को हाथ से जाने देना, जो परमेश्वर हमें देना चाहता है, हमारी अपनी इच्छा पर निर्भर है! याकूब 2:13 में यीशु के सौतेले भाई ने ये भयानक शब्द लिखे हैं, ''क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा''!

इस दृष्टांत से कई सबक लिए जा सकते हैं। एक सबक तो यह है कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना पापी को होने वाली निराशा है। 1,00,00,000 डॉलर के ऋण वाले व्यक्ति में हम अपने आप को देखते हैं। आत्मिक दृष्टि से हमारा ऋण इतना अधिक है कि यह कभी चुकाया नहीं जा सकता। सब ने पाप किया है (रोमियों 3:23) और पाप की मज़दूरी आज भी मृत्यु है (रोमियों 6:23)। अफसोस की बात है कि अभी भी हम में से कुछ लोग उस आदमी जैसे हैं, जो राजा के सामने गिड़गिड़ा रहा था कि ''हे स्वामी धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा'' (आयत 26)। कइयों को लगता है कि वे आत्मिक तौर पर अच्छे जीवनों एवं भलाई के कार्यों से पाप की कीमत प्रभु को चुका देंगे। ''प्रभु! मुझे थोड़ा-सा और समय दे दो, मैं सब कुछ ठीक कर लूंगा।'' इस दृष्टांत में घोषणा है कि लाखों वर्षों में भी यह ऋण नहीं चुकाया जा सकता, बिल्कुल नहीं चुकाया जा सकता, हां सचमुच नहीं चुकाया जा सकता। यह धन्यवाद करने के लिए कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है, हमें इसकी समझ होनी आवश्यक है।

परन्तु दृष्टांत की मुख्य शिक्षा यह है कि यदि हमें क्षमा किया गया है, तो हमें भी क्षमा करनी चाहिए। नये नियम में यदि कोई स्पष्ट शिक्षा है तो यही है कि हमें क्षमा किया गया है; इसलिए चाहिए कि हम भी दूसरों को क्षमा करने को तैयार रहें। पौलुस ने इफिसुस और कुलुस्से के भाइयों को ये बातें लिखीं:

> सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैर भाव समेत तुम से दूर की जाए। एक-दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो (इफिसियों 4:31, 32)।

> और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी

करो (कुलुस्सियों 3:13)।

क्षमा पर चर्चा

क्षमा करने से क्या अभिप्राय है

क्षमा करने का क्या अर्थ है? कई बार हमें सिखाया जाता है कि ''क्षमा कर और भूल जा।'' परन्तु मानवीय मन का अध्ययन करने वाले लोग बताते हैं कि *वास्तव* में क्षमा करना और भूल जाना असम्भव है। जो कुछ हमने देखा-सुना या सहा होता है, वह हमारे मन में कहीं न कहीं अवश्य रहता है। आवश्यक नहीं कि यह बुरा ही हो। परमेश्वर भी वास्तव में ''क्षमा करके भूल''[8] नहीं जाता है। वरना हमारे पास उत्पत्ति की पुस्तक ही न होती, जिसमें इस पुस्तक से पूर्व क्षमा किए गए पापों का उल्लेख है। यदि परमेश्वर मूसा को प्रेरणा देकर विस्तृत रूप में सारी बातें न बताता तो उसे हज़ारों वर्ष पूर्व किए पापों का पता नहीं चलना था। इस प्रकार परमेश्वर ने उन पापों को ''याद रखा'' चाहे उनमें से कुछ पाप वर्षों पूर्व क्षमा किए गए थे। बाइबल जब यह कहती है कि परमेश्वर हमारे सब पाप क्षमा कर देता है और उन को स्मरण नहीं करता (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12) तो इसका क्या अर्थ है? उसके बाद परमेश्वर हमारे साथ ऐसा व्यवहार करता है, *जैसे* वे पाप कभी किए ही न हों। एक लेखक ने लिखा है:

> बाइबल में ''भूल जाने'' का अर्थ है ''अब इन से प्रभावित न होना।'' जब परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि ''मैं उनके पापों को, और उनके अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूंगा'' (इब्रानियों 10:17), तो वह यह नहीं कह रहा होता कि उसकी स्मरण शक्ति कमज़ोर हो गई है! परमेश्वर की स्मरण शक्ति कमज़ोर नहीं हो सकती। परमेश्वर यह कह रहा होता है कि ''मैं उनके पापों को उनके विरुद्ध इस्तेमाल नहीं करूंगा। उनके पाप मेरे सामने नहीं ठहराए जाएंगे या उनके प्रति मेरे व्यवहार को प्रभावित नहीं करेंगे।''[9]

हमें यही सीखने की चुनौती मिलती है।

पिछले कुछ वर्षों से कड़वाहट दूर करने में लोगों की सहायता करने की कोशिश करते हुए मैंने देखा है कि कई लोगों को यह अनुभव करने के लिए सहायता मिलती है कि मानवीय क्षमा दो चरणों में मिलती है।

एक अर्थ में क्षमा *तुरन्त* हो सकती है। बाइबल के हमारे पाठ में क्षमा के इस पहलू पर ज़ोर दिया गया है। रोमियों 12:18-21 में इस थोड़ी देर की क्षमा पर कुछ व्यवहार और कार्यों को शामिल किया गया है:

> जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक प्रयास से सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

रोमियों 12 के वचनों से कुछ निष्कर्ष इस प्रकार निकाले जा सकते हैं:

(1) दूसरों को क्षमा करके हम वैसे ही व्यवहार करने की कोशिश करते हैं, जैसे परमेश्वर करता है यानी ऐसे *जैसे* कुछ हुआ ही न हो। परन्तु हम इस नियम के कुछ व्यावहारिक अपवाद और कुछ बाइबल के अपवाद भी देखेंगे।[10] जहां तक हो सके हम अपने सम्बन्धों और पूर्व प्रभाव के प्रभावित होने से बचने की कोशिश करेंगे। हम उन लोगों को टालने की कोशिश नहीं करते। हम उनसे बातचीत करने से इनकार नहीं करते। अपने सम्बन्धों में हम पिछली बातों को रुकावट नहीं बनने देना चाहते। ''तुम अपने भरसक प्रयास से सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।''

(2) जब हम उन्हें क्षमा करते हैं, जो हमें सताते हैं तो हम बदला न लेने का संकल्प लेते हैं। इसलिए दूसरों से बात करते हुए भी यही ध्यान में रखते हैं। हम अपने सताने वालों पर पलट कर वार करने की कोई कोशिश नहीं करते। ऐसी बातें परमेश्वर के हाथ में दे देते हैं। ''अपना पलटा न लेना; ... क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है।''

(3) जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं, तो हम उनके लिए, जिन्हें क्षमा करते हैं ''उत्तम की तलाश'' करते हैं यानी हम उनकी भलाई चाहते हैं। *अगापे* प्रेम का आवश्यक भाग है जो सब लोगों के लिए होना चाहिए। ''परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला।''

(4) जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं तो हम अपने मन से उनके प्रति हर प्रकार की कड़वाहट और बैर निकालने की कोशिश करते हैं। ''बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।''

यह अंतिम सुझाव हमारे मन में *दीर्घ-कालिक* क्षमा की बात डालता है। यदि हम बहस के दौरान क्षमा कर भी दें, तो हो सकता है कि अपने सताने वालों के प्रति हमारे मन में बुरी भावनाएं बनी रहें। हो सकता है कि अभी भी हमें उनके पास घुटन महसूस होती हो। दीर्घ-कालिक क्षमा लम्बी प्रक्रिया हो सकती है। इसमें कई-कई साल, बल्कि जीवन भर का समय लग सकता है।

देर तक की क्षमा की दो बातें मुख्य हैं। पहली यह कि इस पर कार्य करना छोड़ा न जाए। हम क्षमा किए जाने के साथ ऐसा व्यवहार करते रहें, जैसे कुछ हुआ ही न हो। अपनी भावनाओं को वश में रखें। सम्भवतया यह कठिन है, परन्तु वास्तव में समय हर दर्द की दवा है।

दूसरी मुख्य बात यह है कि हम अपना अधिकतर समय प्रार्थना में बिताएं। निरन्तर परमेश्वर के सामने उससे सहायता लेने के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ''परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मत्ती 19:26)। हमें उसके लिए, जिसने हमें सताया है, प्रार्थना करते रहना चाहिए। जैसे यीशु ने क्रूस पर की थी: ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। किसी के लिए निरन्तर प्रार्थना करते रह कर, उसके प्रति कड़वाहट रखने को असम्भव बना देता है।

हम देखेंगे कि देर तक की क्षमा हमारे मनों में बढ़ रही है, जबकि दुखदायक घटनाएं हमारे जीवन पर प्रभाव डालना छोड़ रही हैं, और वे हमारे मन से निकलती जा रही हैं। हम देखेंगे कि क्षमा की प्रक्रिया तब पूरी होती है, *जब हम उस घटना को बिना कष्ट के याद करते हैं*। हम जीवन में उस उंचाई तक पहुंच सकते हैं और नहीं भी। यदि पहुंच जाते हैं तो बहुत अच्छा लगता है! हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि उसने हमें मसीही व्यवहार में एक नई उंचाई तक पहुंचाया है!

क्षमा हमारे लिए क्या करती है

क्षमा की आदत पड़ जाने पर हम देखेंगे कि क्षमा करने वाले के लिए क्षमा करना, क्षमा पाने वाले से अधिक आनन्द देता है। यदि हम क्षमा नहीं करते तो हमारे मनों में कड़वाहट बढ़ती जाती है। इब्रानियों 12:15 इस कमी के विरुद्ध चेतावनी देता है: ''देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट दे और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।''

फिर क्षमा हमें स्वतन्त्र कर देती है। यदि हम यह सोचते रह कर मन में बैर रखते हैं तो यह हमारे जीवन में भारी पड़ जाएगी। अपने सताने वालों को क्षमा करने का अर्थ है, घृणा का बोझ उतारना, जिसमें हम अपने आप को क्रोध से छुड़ा कर अपने ढंग से जीने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं![11]

इसलिए आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु ने यह आदेश दिया कि जैसे हमें क्षमा किया गया है, वैसे ही हम भी दूसरों को क्षमा करें। क्षमा करने से हमें आत्मिक और शारीरिक तौर पर सहायता मिलती है। किसी ने लिखा है:

> परमेश्वर ने हमें केवल कानूनी तौर पर या शान्ति बनाए रखने के नियम के अनुरूप नहीं, बल्कि हमारे भले के लिए एक-दूसरे को क्षमा करने का आदेश दिया है। क्रोध और घृणा को जमा करने से शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की हानि होती है। यह विशेष सम्बन्धों को बनाने व बनाए रखने के लिए हमारी योग्यता को प्रभावित करता है। यह सेहत व शान्ति दोनों का नाश करता है, क्योंकि आनन्द और स्वास्थ्य, घृणा और क्रोध इकट्ठे नहीं रह सकते। दूसरी ओर सच्ची क्षमा बड़े आनन्द व संतुष्टि के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा से जुड़ी हुई है। यह शान्ति व एकता का खुला चश्मा है।[12]

सारांश

इस पाठ को जितना हो सके व्यावहारिक बनाने की कोशिश करें। परमेश्वर *आप से* किसको क्षमा कराना चाहता है? क्या बीते समय में किसी ने आप को कष्ट पहुंचाया है? क्या आप मन में उस व्यक्ति के बारे में बुरी भावनाएं रखते हैं? क्या आप ने उसे दिल से क्षमा कर दिया? यदि आप ने क्षमा कर दिया है तो क्या आप पूरी कोशिश कर रहे हैं कि पिछली गलती आपके सम्बन्धों में कोई फर्क न आने दे? क्या अपने व्यवहार को बदलने की कोशिश कर रहे हैं? क्या आप उसके लिए, जिसने आप को कष्ट दिया था, प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं?

यदि आप को लगे कि आप के मन में क्षमा के बजाय कड़वाहट है तो मेरी प्रार्थना है कि आप उस व्यक्ति को क्षमा करने का तरीका ढूढ़ें। इस अध्ययन की दो मुख्य शिक्षाएं याद रखें: (1) हमारे 1,00,00,000 डॉलर के पाप क्षमा किए गए हैं, इसलिए हमें चाहिए कि दूसरों के 18 डॉलर के पाप क्षमा करने को तैयार रहें। (2) यदि हम क्षमा नहीं करते तो हमें भी क्षमा नहीं किया जाएगा।

हे परमेश्वर, क्षमा करना सीखने में हमारी सहायता कर!

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोटस

यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो आप अध्याय 18 के शेष भाग से क्षमा पर सिखाएं। आयतों 21 से 35 का यह अर्थ नहीं है कि हमें किसी भटक गए भाई को वापस लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए और आवश्यकता हो तो उसे अनुशासित नहीं करना चाहिए (आयतें 15-21)। इसके विपरीत ये आयतें यह सिखाती हैं कि (1) कलीसिया के अनुशासन को कभी भी व्यक्तिगत शत्रुता नहीं समझना चाहिए; (2) हमें अनुशासित किए जाने वाले के प्रति अपने मन में वैर नहीं रखना चाहिए; और (3) कलीसिया में प्रेम और क्षमा का माहौल होना चाहिए।

इस पाठ में मैंने जानबूझकर बहुचर्चित विषय ''यदि कोई मन न फिराए (और अपने व्यवहार से क्षमा न मांगे), तो क्या हम उसे क्षमा कर सकते हैं ?'' को नज़रअंदाज़ किया है। यह चर्चा लूका 17:4 में यीशु के शब्दों पर आधारित थी। यह प्रश्न उठाया जाता है कि जब परमेश्वर किसी को मन फिराए बिना क्षमा नहीं देता तो वह हमसे भी उम्मीद नहीं करता कि हम उन्हें क्षमा करें जिन्होंने हमारे सामने गलती न मानी हो। इस पूरी चर्चा पर मेरी दिक्कत यह है कि मैं परमेश्वर नहीं हूं। जब कोई यह कहता है कि ''मैं मन फिराता हूं'' तो मुझे यह मालूम नहीं होता कि उसने सचमुच मन फिराया है या नहीं। जब वह मुझसे क्षमा मांगता है तो मेरे पास ऐसा कोई ढंग नहीं है, जिससे मैं यह बता सकूं कि वह सच्चे मन से क्षमा मांग रहा है। वास्तव में यदि मझे *किसी ने एक दिन में सात बार* सताया हो (लूका 17:4) और हर बार आकर कहा हो कि ''मैं मन फिराता हूं,'' तो मुझे लगता है कि लगभग तीसरी बार उसके क्षमा मांगने पर मुझे उसकी सच्चाई पर संदेह होने लगेगा! यानी मुझे नहीं लगता कि यीशु मनुष्य के मन फिराने पर इतना ज़ोर दे रहा था कि जितना इस बात पर कि हमें किसी को भी क्षमा न देने का अधिकार नहीं है।

मैं इस चर्चा में इसलिए नहीं पड़ा क्योंकि मैं दिखावटी ''क्षमा का समारोह'' की कोई परवाह नहीं करता (''मैं शर्मिंदा हूं, मुझे क्षमा कर दें।'' ... ''जाओ क्षमा किया।'') जितना मैं मन से क्षमा करने के पक्ष में। यीशु ने क्षमा न करने वाले सेवक का दृष्टांत यह कहकर समाप्त किया, ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को *मन से* क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।'' जब यीशु ने प्रार्थना की, ''हे पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34), तो उसके कहने से यह संकेत नहीं मिलता कि उसे क्रूस पर चढ़ाने वालों का पाप उसी समय क्षमा कर दिया गया था क्योंकि पतरस ने पचास दिन बाद यहूदियों पर यही आरोप लगाया था (प्रेरितों 2:23)। बल्कि यीशु के शब्दों से संकेत मिलता था कि उसके *मन* में उनके बारे में कोई कड़वाहट नहीं थी!

जब भी मैं ''क्या हम किसी को उसके मन फिराए बिना क्षमा कर सकते हैं ?'' प्रश्न पर चर्चा पढ़ता हूं तो मैं यह देखने के लिए कि लेखक इस बात पर ज़ोर देता है, दिखाने के लिए किसी को ''क्षमा करें या न'' परन्तु हम अपने मनों में कड़वाहट जमा नहीं कर सकते यानी हम मन में क्रोध नहीं रख सकते। यदि वह इस बात पर ज़ोर देता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।

टिप्पणियां

[1]एल्ड्रेड एकोल्स, *डिस्कवरिंग द पर्ल ऑफ़ ग्रेट प्राइस* (फोर्ट वर्थ, टैकसस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1992), 43. [2]अपनी शिक्षा का आधार उन्होंने आमोस 1 और 2 को बनाया। उनका तर्क था कि परमेश्वर ने विभिन्न जातियों को उनके अपराधों के लिए क्षमा कर दिया और फिर चौथी पीढ़ी पर अपना क्रोध उण्डेला (आमोस 1:3, आदि) और अब परमेश्वर मनुष्यों से अधिक उम्मीद नहीं करेगा। [3]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''सत्तर जमा सात'' है (देखें NIV)। उत्पत्ति 4:24 में ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल किया गया है। सही-सही संख्या अनावश्यक है। यह सिखाने के लिए किया है कि हमारी क्षमा की कोई *सीमा* नहीं होनी चाहिए, यीशु ने 77 या 490 की संख्या कर इस्तेमाल किया है। [4]एक सम्सया यह है कि कुछ अधिकारी अभी भी एक सौ साल पुरानी संख्याओं का इस्तेमाल करते हैं, जब सब कुछ सस्ता था। [5]सम्पूर्ण पलिश्तीन का कुल वार्षिक कर केवल आठ सौ तौड़े था। आम मज़दूर को एक तोड़ा कमाने के लिए बीस साल तक काम करना पड़ता था। दाऊद और उसके राजकुमारों ने मन्दिर का भवन बनाने के लिए इससे दोगुने से थोड़ा अधिक दिया था (1 इतिहास 29:4-7)। कुछ अधिकारियों का मानना था कि दस हज़ार तोड़े आज के दस करोड़ डालर के मूल्य से अधिक होंगे। [6]यह करने का उस आदमी को कानूनी अधिकार तो था परन्तु नैतिक अधिकार कोई नहीं था, विशेष कर जब उसमें पहले ही दया दिखाई गई थी। [7]KJV में यह शब्द है, जो उन कुछ अनुवादों से बेहतर है, जिनमें ''जेलर'' है। [8]परमेश्वर *सर्वज्ञ* है अर्थात वह *सब कुछ* जानता है, जिसमें क्षमा किए गए पाप भी शामिल हैं। [9]वारेन डब्लयू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स, 1989), 89. [10]यदि कोई अपकी चोरी करता है तो उसे क्षमा कर भी दें, तो सहजबुद्धि यही कहती है कि आप उसे अपने वित्तीय प्रबन्ध की ज़िम्मेदारी तुरन्त नहीं दे देंगे। अपने बच्चे से दुर्व्यवहार करने वाली स्त्री को क्षमा करने के बावजूद तुरन्त उसको आया नहीं लगाया जाता। बाइबल के अपवादों के सम्बन्ध में एक ही उदाहरण काफी होगा कि यदि पति या पत्नी बेवफा हो जाता या जाती है और आपके पास क्षमा के लिए आए तो आपको चाहिए कि उसे क्षमा कर दें। इसका अर्थ यह नहीं है कि आपके लिए उसके साथ पति या पत्नी के रूप में ऐसा रहना आवश्यक है जैसे कुछ हुआ ही न हो (मत्ती 19:3-9)। ऐसी घटनाएं नियम का अपवाद ही है। मेरा अनुमान रहा है कि अधिकतर मामलों में हमारी भावनाएं आहत होती हैं, जिनमें ये अपवाद लागू नहीं होते।

[11]उनके लिए जिन्हें पति या पत्नी द्वारा हाल ही में छोड़ दिया गया है यह एक बड़ा सबक है। मैं यह भी कह सकता हूं कि यह नियम तब भी सही है जब वह व्यक्ति मर गया हो। बहुत से लोग जिनके साथ दुर्व्यवहार हुआ है, उन लोगों के प्रति मन में घृणा रखते रहे जबकि कई बार उनके साथ दुर्व्यवहार करने वाले की मृत्यु भी हो गई। इन लोगों के लिए शांति ढूंढ़ने से पहले आवश्यक है कि वे उन लोगों को क्षमा करने का ढंग ढूंढ़े। एक तकनीक जो आम तौर पर दुखी लोगों के लिए सहायक होती है, वे अपने कष्ट और क्षमा करने का अपना इरादा व्यक्त करते हुए मरे बहुत लोगों को पत्र लिखना है। [12]एकोल्स, 49.